पाठ 13– अध्याय 13

जबकि तोरह क्लास बाइबिल की पहली 5 पुस्तकों का अध्ययन करने के बारे में है,तोरह,यह शायद हमारे लिए सबसे अधिक लाभदायक भी है जब हम हमारे दिन और उम्र में हमारे लिए इसकी प्रासंगिकता को समझ सकते हैं, और इसे अपने जीवन में लागू करें। कई उपदेशकों और शिक्षकों द्वारा यह कहा गया है कि हम, आज, इतिहास के एक बहुत ही विशेष समय में हैं; कि हम सदियों पुरानी बाइबिल भविष्यवाणियों के सच होने के चश्मदीद गवाह हैं और, वे सही हैं। लेकिन, इसे परिप्रेक्ष्य में रखने के लिए, यह महसूस करना अच्छा है कि हर पीढ़ी ने भविष्यसूचक घटनाओं को घटित होते नहीं देखा है; इसलिए, कोई यह सोचेगा कि जब परमेश्वर की कोई भविष्यवाणी सच होगी, तो परमेश्वर के लोग इससे बहुत उत्साहित होंगे। फिर भी, कलीसिया, और पृथ्वी की अधिकांश यहूदी आबादी, ने अधिकांशतः, सभी भविष्यसूचक इतिहास की दो सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं का स्वागत किया है, एक यहूदी राष्ट्र के रूप में इस्राएल का पुनर्जन्म, और यरूशलेम का नियंत्रण यहूदी लोगों को लौटाना, एक उदासीन जम्हाई के साथ। मुझे लगता है कि ऐसा मुख्य रूप से इसलिए है क्योंकि हमें यह एहसास नहीं है कि भविष्यवाणी की पूर्ति हर दिन नहीं होती है।

वास्तव में, 70 ई. में यरूशलेम के पतन के साथ, सभी व्यवहारिक उद्देश्यों के लिए बाइबिल में भविष्यवाणी की गई घटनाओं का खुलासा एक विस्तारित अवधि के लिए निष्क्रिय हो गया। 18 शताब्दियों से भी अधिक समय से बाइबिल में उल्लिखित एक भी भविष्यसूचक घटना घटित नहीं हुई है। ओह उस दिन की तैयारी के लिए दुनिया में बहुत कुछ चल रहा था जब परमेश्वर एक बार फिर भविष्यवाणी की घड़ी को शुरू करेंगे, सभी चीजों के अंत की उल्टी गिनती शुरू करेंगे जैसा कि हम जानते हैं; लेकिन लगभग 1900 वर्षों तक परमेश्वर के लोगों के पास ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे यह पता लगाया जा सके कि बाइबिल के इतिहास में वे कहाँ खड़े थे। हालाँकि, आज हमारे जीवन में ऐसा नहीं है, लेकिन हमारे चारों ओर देखने पर, आपको लगेगा कि कुछ भी सामान्य नहीं हो रहा है।

70 ई. में यरूशलेम के विनाश के बाद, अगली भविष्यवाणी की गई घटना जो घटित होनी थी, वह उन लोगों की जिन्हें रोमन फैलाव, या रोमन निर्वासन कहा जाता है, यहूदी लोग विश्वासियों और गैर विश्वासियों अपने बैग पैक करके रखे हुए थे और यरूशलेम के रोमन विनाश के बाद के पहले कुछ दशकों में उस वापसी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, जब उन्हें इस शहर में रहने से मना कर दिया था। लेकिन दूसरी शताब्दी ई. के गैर–यहूदी कलीसिया और मसीहाई यहूदियों ने सोचा कि ईसा मसीह निश्चित रूप से किसी भी क्षण वापस आएँगे; इसी तरह पारंपरिक यहूदियों ने सोचा कि उनकी मातृभूमि में वापसी और उनके मंदिर का पुनर्निर्माण निकट है, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जो लोग इस्राएल के परमेश्वर की उपासना करते थे और तीसरी शताब्दी में रहते थे वे बेचैन हो रहे थे और इस बात से बहुत चिंतित थे कि परमेश्वर को अपने लोगों को उनकी पवित्र भूमि पर वापस बुलाने में इतना समय क्यों लग रहा है, लेकिन उनकी चिंताएँ कम नहीं हुई थीं। चौथी शताब्दी में ईसा मसीह का पूरी तरह से गैर–यहूदी कलीसिया अभी भी ईसा मसीह की वापसी का इंतजार कर रहा था, और हर देश के यहूदी जहाँ वे प्रवास कर गए थे, आश्चर्यचकित थे कि क्या शायद वह समय करीब आ गया है जब वे घराना वापस जा सकते

हैं। जैसा कि 5वें, 6वें वालों ने किया। 7वीं और 8वीं शताब्दी, लगभग 17वीं शताब्दी तक, जब ईसाई धर्म ने एक भयानक मोड़ ले लिया और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि हम निश्चित रूप से इस्राएल की अपनी मातृभूमि में वापसी के बारे में उन भविष्यवाणियों को गलत तरीके से पढ़ रहे होंगे।

कलीसिया ने निष्कर्ष निकाला कि वास्तव में, इस्राएल वापस नहीं लौटने वाला था; कम से कम, वहाँ यहूदी इस्राएल नहीं बनने वाला था और, बाइबिल में जिस इस्राएल की बात की गई,लोग और भूमि दोनों केवल प्रतीकात्मक थे। किस बात का प्रतीक? गैर–यहूदी कलीसिया नई मुख्यधारा की मान्यताएँ जो उभरीं और जो आज ईसाई जगत पर हावी हैं, 17वीं शताब्दी में शुरू हुईं; और ये मान्यताएँ नए उत्तराधिकारी के दृढ़ विश्वास पर केंद्रित थीं कि इस्राएल को कलीसिया द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था। इस्राएल को यहोवा ने पूरी तरह से और स्थायी रूप से अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि उन्होंने उसके पुत्र को अस्वीकार कर दिया था। अब्राहम और मूसा के माध्यम से इब्रानियों को भूमि और छुटकारा के सभी वादे प्राप्त हुए थे और उन्हें अन्यजाति कलीसिया को सौंप दिया गया था। कलीसिया को अब अब्राहम से वादा किए गए सभी आशीष मिलेंगे; वे वादे जिनके बारे में हम अध्याय 12 के पहले कुछ पदों में पढ़ते हैं; दूसरी ओर, इस्राएल को वे सभी श्राप मिलेंगे जो मूसा के नियमों की अवज्ञा से आएँगे।

आइए 20वीं सदी की ओर तेजी से आगे बढ़ें। उह–ओहः "ह्यूस्टन, हमारे पास एक समस्या है" क्योंकि 1948 में इस्राएल अंततः उसी स्थान पर लौट आया जहाँ से उन्हें निर्वासित किया गया था; यहूदी राष्ट्र का पुनर्जन्म हुआ ठीक वैसे ही जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, और, 1967 में, येरूशलेम को यहूदी लोगों के नियंत्रण में वापस कर दिया गया, जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, और इसलिए यीशु द्वारा नियुक्त किया गया था और, इन चौंका देने वाली घटनाओं पर कलीसिया की क्या प्रतिक्रिया रही है? सामान्य तौर पर, कुछ भी नहीं। 17वीं सदी के कलीसिया अगुवों की विश्वास की कमी से पैदा हुए वही प्रतिस्थापन धार्मिक पद, आधुनिक कलीसिया सिद्धांत के साथ पूरी तरह से जुड़े और अंतर्निहित पद आज भी दुनिया भर के अधिकांश चर्चों में अभी भी पढ़ाए जा रहे हैं। यह ऐसा है मानो अब्राहम से किए गए वादों पर दावा करने के लिए इस्राएल की वापसी कभी नहीं हुई।

आप जानते हैं, ईसाइयों को बचपन से ही सिखाया गया है कि यीशु के दिनों में उन भयानक यहूदियों के प्रति निराशा व्यक्त करें और जानबूझकर अपना सिर हिलाएँ, जिन्हें लंबे समय से प्रतीक्षित मसीहा के आगमन को देखने का अकल्पनीय सौभाग्य प्राप्त था, लेकिन फिर उनके द्वारा इसे अनदेखा कर दिया गया। यहूदी परंपराएँ. इतने अंधे हैं कि उन्होंने परमेश्वर के पुत्र को यह दावा करने के लिए मार डाला कि वह वास्तव में कौन था।

खैर, आज हम कलीसिया के लोग उस लंबे समय से प्रतीक्षित के साक्षी हैं जब इस्राएल अपने निर्वासन से वापस आएगा, अपनी भूमि विरासत को पुनः प्राप्त करेगा, और एक राष्ट्र के रूप में पुनर्जन्म लेगा; हमने टीवी पर देखा कि इस्राएली सेना ने केवल 6 दिनों में 5 शक्तिशाली अरब सेनाओं के गठबंधन को हरा दिया, और 1967 में 70 ईस्वी के बाद पहली बार यरूशलेम को अपने पवित्र शहर के रूप में पुनः प्राप्त किया। भविष्यवाणी हुई है; यहूदी वापस आ गए हैं, और अधिकांश भाग में, हमारी ईसाई परंपराओं के कारण, कलीसिया इसके प्रति पूरी तरह से अंधा हो गया है। दिलचस्प बात यह है कि जब से परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया था तब से यीशु मसीहा के आने तक 1900 साल से कुछ कम समय था; और उस दिन से 1900 वर्ष से थोड़ा समय था जब परमेश्वर ने

अपने लोगों को भूमि से बाहर निकाल दिया था, लेकिन वादा किया था कि वह उन्हें वापस लाएगा, उस दिन तक जब तक कि वे उस वादे पर हमेशा के लिए दावा करने के लिए वापस नहीं आए। शायद हमें ध्यान देना चाहिए।

बाइबिल में इन घटनाओं के कई उल्लेख हैं, लेकिन मेरे लिए, उनमें से किसी में भी परमेश्वर के उस अजीब भविष्यवक्ता, यहेजकेल द्वारा कही गई बातों का प्रभाव नहीं है। यहेजकेल उन यहूदियों में से एक था जिसे नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम में उसके घराना से निकाल लिया था और बेबीलोन में निर्वासित कर दिया था, जब बेबीलोन साम्राज्य ने 597 ईसा पूर्व यहूदा पर विजय प्राप्त की थी।

तो चलिए थोड़ा सा घूमकर देखते हैं और साथ ही उत्पत्ति 12 और 13 में अब्राहम से किए गए वादों और यहेजकेल के 36 और यहेजकेल के भविष्यसूचक कथनों के बीच बिंदुओं को जोड़ें 37. और फिर वह सब जो हमारे समय की घटनाओं से जुड़ा है, यहूदी लोगों की अपनी मातृभूमि में अंतिम वापसी की भविष्यसूचक कहानी पढ़कर। एक वापसी, 18–सदी के भविष्यवाणी के पूरा होने के अंतराल के बाद, आर्मागेडन की उलटी गिनती की बहाली का प्रतीक है।

यहेजकेल 36 और 37 पढ़ें

बहुत खूब! मैं चाहता हूँ कि जॉर्ज लुकास या स्टीवन स्पीलबर्ग उन दो अध्यायों में जो कुछ भी शामिल है उस पर एक फिल्म बनाएँ!

पहली बात जो मुझे कहने की ज़रूरत है वह यह है कि यहेजकेल में जिस घटना के बारे में बात की गई है वह बेबीलोन से यहूदियों की वापसी के बारे में नहीं है। यहेजकेल के इन दो अध्यायों का अध्ययन करने में ही कुछ सप्ताह लग जाते है; तो, मैं इन पदों को समझने के लिए बस कुछ महत्वपूर्ण कुंजियाँ बताना चाहता हूँ।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण वाक्यांश "इस्राएल का पूरा घराना" का अर्थ है, जिसे कभी–कभी "इस्राएल के दोनों घराने या यहाँ तक कि "सभी इस्राएल" के रूप में भी अनुवादित किया जाता है। यहेजकेल के वचन लगभग 25 वर्षों की अवधि में लिखे गए थे, जो 597 ईसा पूर्व में बेबीलोन द्वारा यहूदा पर विजय प्राप्त करने के कुछ समय बाद शुरू हुए थे। जिस भाग को हम देख रहे हैं वह बाद के वर्षों में लिखा गया था। लगभग 130 साल पहले, आपको यह जानना होगा कि इब्री एक विभाजित राष्ट्र थे; पवित्र भूमि के उत्तरी क्षेत्र में 10 गोत्र रहता था, और दक्षिण में 2 गोत्र समूह रहता था। वास्तव में, उत्तरी क्षेत्र एक राज्य था, दक्षिणी क्षेत्र से अलग और अलग, प्रत्येक क्षेत्र अपने ही राजाओं द्वारा शासित करते थे। मैं स्पष्ट कर दूँ इस्राएल का एकीकृत राज्य, जिस पर दाऊद और फिर सुलैमान ने शासन किया, उत्तरी क्षेत्र को कई नामों से विभाजित किया गयाः उत्तरी साम्राज्य, इस्राएल का राज्य, और कुछ दस्तावेज़ इसे यूसुफ के राज्य के रूप में भी संदर्भित करते हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, जैसा कि उस युग के लिए विशिष्ट था, इसे उस गोत्र के नाम पर बुलाया गया था जो उस क्षेत्र में प्रमुख थीः एप्रैम की गोत्र लगभग 900 ईसा पूर्व यहेजकेल के समय (लगभग 590 ईसा पूर्व) तक, उस उत्तरी क्षेत्र को एप्रैम साम्राज्य कहा जाता था। एक ऐसा नाम जिससे अधिकांश लोग परिचित नहीं हैं।

हालाँकि, दक्षिणी साम्राज्य वह है जिसके बारे में हम अधिक जानते हैंः इसे यहूदा कहा जाता था। अब, बाइबिल की भाषा में, उत्तरी राज्य को "इस्राएल का घराना" या, अधिक सटीक रूप से "एप्रैम का घराना" भी कहा

जाता था, और दक्षिणी राज्य को "यहूदा का घराना" कहा जाता था। ये दो "घराना" एप्रैम का घराना और यहूदा का घराना, मिलकर बने जिसे बाइबिल इस्राएल का पूरा घराना कहती है। अब, लगभग सभी बाइबिल में "एप्रैम का घराना" कहने के बजाय "इस्राएल का घराना" कहा जाएगा, जो भ्रमित करने वाला है। दरअसल, गृह युद्ध के तुरंत बाद कुछ वर्षों तक उत्तरी राज्य को दर्शाने के लिए 'इस्राएल का घराना' शब्द का प्रयोग किया गया था, लेकिन जल्द ही इसका प्रयोग बंद हो गया।

बात यह है कि आज इस्राएल के दो घरानों में से केवल एक ही अपने वतन लौटा हैः यहूदा। यहूदा उस चीज़ से बना है जिसे आज हम यहूदी कहते हैं। इस्राएल का वह दूसरा घराना, जिसमें इस्राएल की 12 गोत्रयों में से 10 शामिल थे, अभी तक इस्राएल में वापसी में भाग नहीं लिया है।

यहेजकेल 37 का वह भाग जहाँ वह दो छड़ियों के बारे में बात कर रहा है। एक एप्रैम के लिए और एक यहूदा के लिए वापस एक साथ रखी जा रही है, उस समय का जिक्र है जब इस्राएल के दोनों घराना पवित्र भूमि पर लौट आएंगे, और फिर से एक हो जायेंगे। लेकिन, आज तक, केवल एक घराना, यहूदा का घराना वापस आया है।

सामान्य प्रश्न यह हैः ठीक है, क्या यहेजकेल वास्तव में इब्रानियों के उनके बेबीलोनियन निर्वासन से वापसी के बारे में नहीं है? नहीं, क्योंकि वह निर्वासन केवल यहूदा का निर्वासन था; इस्राएल का दूसरा घराना एप्रैम अश्शूर द्वारा जीत लिया गया था, लोगों को निर्वासित कर दिया गया और उन 120 देशों में तितर–बितर कर दिया गया, जिन्होंने असीरियन साम्राज्य का गठन किया था; वह घटना यहेजकेल से लगभग डेढ़ शताब्दी पहले घटी थी, और मूल रूप से एक पहचाने जाने योग्य लोगों के रूप में उनका अस्तित्व समाप्त हो गया था। दूसरे वचनों में, यहेजकेल 36 और 37 में बताई गई घटनाएँ बेबीलोन से वापसी के बारे में नहीं थीं बल्कि अभी घटित होने वाली हैं।

फिर भी (और जल्द ही 3 भाग की शाम की क्लास में हम इस विषय पर गहराई से विचार करेंगे), एप्रैम की वापसी होने लगी है। बमुश्किल से 3 महीने पहले, मार्च 2005 में, इस्राएली सरकार ने आधिकारिक तौर पर उन लोगों की पवित्र भूमि पर वापसी को मंजूरी दे दी थी जो कहते हैं कि वे यहूदी नहीं हैं, लेकिन वे इस्राएली हैं अर्थात्, इस्राएल में प्रवास करने की इच्छा रखने वाले ये लोग इस्राएल की उन लंबे समय से खोई हुई 10 गोत्रों में से कुछ हैं, इस्राएल का दूसरा घराना, एप्रैम। एक बार फिरः यहूदी केवल गोत्र या साम्राज्य यहूदा के हैं, जो मूल रूप से बिन्यामिन और यहूदा की दो गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एप्रैम अन्य 10 गोत्रों का प्रतिनिधित्व करता है (लंबे समय से यह माना जाता है कि वे लुप्त और अज्ञात हैं), और वे यहूदी नहीं हैं। लेकिन वे निश्चित रूप से इस्राएली हैं।

तो, जिन घटनाओं के बारे में हमने अभी यहेजकेल 36 और 37 में पढ़ा है वे अभी घटित हो रही है। डरावना है न?

आज, हम उस भूमि पर एक गंभीर बहस के दौर में हैं जहाँ यहूदी लौट आए हैं, और जिसमें एप्रैम अभी आना शुरू कर रहा है; और वह तर्क किसी दिन दुनिया को अंतिम युद्ध में झोंक देगा, जहाँ यहेजकेल के

निम्नलिखित अध्याय हमें ले जाएंगे, हालाँकि हम फिलहाल वहाँ नहीं जाएंगे। कुछ लोग यह तर्क करना चाह सकते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को हमेशा के लिए जो भूमि दी थी उसकी सटीक सीमाएँ क्या थीं; लेकिन मेरी बात सुनोः कम से कम इसमें उस ज़मीन का हर इंच शामिल है जिस पर फ़िलिस्तीनी अब अपना दावा करते हैं। आप देखिए, जिस क्षेत्र में अब्राहम उस समय खड़ा था जब परमेश्वर ने उससे यह वादा किया था, वह ठीक उसी के मध्य में है जिसे आज आमतौर पर वेस्ट बैंक कहा जाता है, या, सबसे हास्यास्पद संभव वचनों में कब्जा किया गया क्षेत्र।

मैं आपको यह नहीं बता सकता कि जब भी मैं हमारे राष्ट्रपति या हमारे विदेश मंत्री (मेरे विचार से वे सभ्य और नेक इरादे वाले लोग हैं) को जबरदस्त राजनीतिक दबाव के माध्यम से पश्चिमी तट को इस्राएली के कब्जे से अलग करने और उस भूमि को फिलिस्तीनियों को उनके स्वयं के संप्रभु राष्ट्र के रूप में देने की बात करते हुए सुनता हूँ, तो अमेरिका के लिए मेरे मन में कितना भय होता है; और वह भी शांति की आशा में।. हमारे पास कलीसियाओं का एक बड़ा गठबंधन भी है जो अरबों और फिलिस्तीनियों के लिए सहिष्णुता, निष्पक्षता और दया के सिद्धांत के आधार पर यही मांग कर रहा है। यह वही भूमि है जिसे परमेश्वर ने अब्राहम को दिया था और उसके वंशजों के लिए सदैव के लिए अलग रखा था और, परमेश्वर ने चेतावनी दी है कि जो लोग उसके वंशजों के खिलाफ जाते हैं (जो अब्राहम को शाप देते हैं), वह उनके खिलाफ आएगा और न्याय करेगा (वे शापित होंगे)।

बाइबिल के अनुसार, प्रत्येक संकेत यह है कि वास्तव में कोई इस्राएल पर उस भूमि के एक हिस्से को आत्मसमर्पण करने का निर्णय लेने के लिए मजबूर करने जा रहा है जो अब्राहम वाचा के केंद्र में है। फिलहाल, दुख की बात है कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार होगी जो शांति के लिए राष्ट्रपति बुश के रोडमैप को प्राप्त करने के लिए उसे मजबूर करेगी और, दुनिया हमारे समय में जिस शांति की कामना करती है वह बहुत ही कम समय के लिए घटित होगी। लेकिन, समस्या यह है कि दुनिया के साथ शांति का मतलब है परमेश्वर के साथ युद्ध। आप देखिए परमेश्वर का विभाजन, चयन करना और चुनाव करने का पैटर्न कभी ख़त्म नहीं होताः हम परमेश्वर के उन परिभाषित और विभाजित करने वाले क्षणों में से एक में रह रहे हैं और, उस विभाजन का हिस्सा और परमेश्वर द्वारा उपयोग की जाने वाली पृथक्करण प्रक्रिया हमारे प्रत्येक प्रश्न के एक ही उत्तर पर आधारित हैः इस्राएल पर आप कहाँ खड़े हैं? और, यह पसंद है या नहीं, हमें एक या दूसरे पक्ष को चुनना होगा। हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और उसके वाचाओं का सम्मान करना और उसके साथ शांति रखना चुन सकते हैं, या हम दुनिया और धर्मत्यागी कलीसिया के साथ खड़े हो सकते हैं। इस्राएल के साथ खड़ा होना परमेश्वर के साथ खड़ा होना है। इस्राएल के साथ खड़ा न होना दुनिया के साथ खड़ा होना है, परमेश्वर के खिलाफ है।

आइए, अब पद 14–18 को दोबारा पढ़कर अध्याय 13 को समाप्त करें।

उत्पत्ति 13: 14–18 पढ़ें

अब जब मैंने आपको यह प्रदर्शित कर दिया है कि इन पदों के वचन अभी भी प्रभावी हैं, और सभी चीजों के अंत तक प्रभावी रहेंगे, मुझे आशा है कि आप उनका महत्व समझेंगे। जो भूमि परमेश्वर ने अब्राहम को दिखाई

वह सदैव के लिए बिना शर्त इस्राएल की रहेगी। अब, वास्तव में अब्राम कहाँ था जब उसे हर दिशा में चारों ओर देखना था, और वह सब उसके वंशजों का था? उत्पत्ति अपोक्रिफ़ॉन उसे रामथ–हज़ोर पर रखता है, जो बेथेल से लगभग 5 मील उत्तर पूर्व में है। यह मध्य इस्राएल का सबसे ऊँचा स्थान है, जिसकी ऊँचाई लगभग 3300 फीट है। इस स्थान से, आज भी, पश्चिम में भूमध्य सागर और पूर्व में जॉर्डन राज्य तक देखा जा सकता है।

अब, पद 17 कहता है कि अब्राहम को भूमि की लंबाई और चौड़ाई में चलना था, क्योंकि परमेश्वर ने उसे यह दिया. पूरी तरह से इसका क्या मतलब है? क्या वह सचमुच जो कर रहा था उसे रोकना चाहता था और भूमि के प्रत्येक क्षेत्र का दौरा करें? या यह महज़ किसी चीज़ का प्रतीक था, या कोई इब्रानी मुहावरा था? टारगम जोनाथन (एक प्रारंभिक इब्रानी टिप्पणी) का कहना है कि जो हो रहा था वह यह था कि अब्राहम चज़काह कर रहा था। चज़काह उस युग की एक व्यापक व्यवस्था प्रथा थी, और बहुत पहले, और मध्य पूर्व की विभिन्न गोत्रों और लोगों में इसका उपयोग किया जाता था। यह मिस्रवासियों के साथ–साथ हित्तियों द्वारा भी जाना जाता था, और उनके प्राचीन दस्तावेजों में इसकी पुष्टि की गई थी और, अवधारणा यह थी कि जब संपत्ति का एक टुकड़ा अर्जित किया जाता था, तो नए मालिक को पूरी संपत्ति की परिधि के आसपास चलना पड़ता था, जो कि, यदि आप चाहें, तो उसके क्षेत्र को चिह्नित करने का प्रतीक था। नोट जब तक नए मालिक ने ऐसा नहीं किया तब तक स्थानांतरण पूर्ण नहीं था। कुछ संस्कृतियों में राजा या शासक को उस क्षेत्र पर अपनी संप्रभुता को फिर से स्थापित करने के लिए समय–समय पर अपने राज्य की परिधि पर चलने की भी आवश्यकता होती है।

अब, परमेश्वर अब्राहम से ऐसा क्यों करवाएगा? अब्राहम की खातिर, और उन कई लोगों की खातिर जिन्होंने संभवतः पूछाः "आप चज़काह क्यों कर रहे हैं?" मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप अब्राहम ने मित्र नहीं बनाए क्योंकि, उनके द्वारा चिह्नित क्षेत्र की रूपरेखा के भीतर कई पहले से ही स्थापित राज्य और शहर–राज्य थे, और मुझे संदेह है कि वे इस विदेशी द्वारा अपनी भूमि के स्वामित्व की प्रतीकात्मक घोषणा से बहुत खुश नहीं थे।

लेकिन, एक और कारण भी हैः हम पुराना नियम का शेष भाग देखने जा रहे हैं। और सामान्य तौर पर संपूर्ण बाइबिल, जहाँ पूरे तोरह में मानव निर्मित सरकारी प्रणालियाँ मौजूद हैं। जब परमेश्वर और मनुष्यों के बीच लेन–देन होता है, तो परमेश्वर इसमें शामिल लोगों को अपने सिस्टम के व्यवस्था, अध्यादेशों और रीति–रिवाजों का उपयोग करने की अनुमति देते हैं। अब्राहम पूरी तरह से परिचित और सहज रहा होगा जब यहोवा ने उससे कहा था कि जाओ और जमीन पर चलो, क्योंकि तब चीजें इसी तरह से की जाती थीं। वास्तव में, यह शायद बहुत बेचैन करने वाला होता, और अब्राहम में बहुत संदेह पैदा करता यदि परमेश्वर ने इसकी आज्ञा न दी होती। ऐसा ही होगा हम एक कार खरीदने गए, हमने सभी कागजी कार्रवाई पूरी की, मेज पर एक चेक रखा, और डीलर ने कहा, "आपको या मुझे किसी भी चीज़ पर हस्ताक्षर करने की कोई ज़रूरत नहीं है। बस कार ले लो और जाओ और हम बस ले लेंगे। एक–दूसरे को इसके लिए वचन देते हैं।" हमें ऐसा करने में काफी असुविधा होगी, एक कारण से, ऐसा नहीं है। आम तौर पर, सभी पक्ष इसे कानूनी बनाने के लिए कागजी कार्रवाई पर हस्ताक्षर करते हैं। कागजी कार्रवाई पर हस्ताक्षर डीलर से आपके पास कार के स्वामित्व के स्थानांतरण की प्रक्रिया को पूरा

करता है। अब्राहम के साथ भी यही हुआ; उस दिन के कानूनी रिवाज के अनुसार, भूमि की परिधि पर चलना कानूनी रूप से संपत्ति के हस्तांतरण को पूरा करता है और इस तरह दोनों पक्षों को लेन–देन पर पूरी तरह से समापन का एहसास होता है।

अध्याय का अंत अब्राहम के हेब्रोन जाने और वहाँ एक वेदी बनाने के साथ होता है। वेदी का निर्माण उस क्षेत्र पर एक ईश्वर या दूसरे के अधिकार की घोषणा करने की प्रथा थी।